

आये दूल्हा बन के भोला इस भेष में
कैसी चमक रही - मणी शेष में
अंग भभूती रेंसी रमाये, सारे बराती खुद शर्माये
गंगा की धारा बही फिर केश में

आये दूल्हा-----

हाथों बिना कोई - कोई कई अखियाँ
खाली कोई धड़ वाला - कोई कई पसीलियाँ
एक प्यारी नदी पर बैठे - हिम देश में

आये दूल्हा-----

बर - तलैया - बिच्छू पहिने, नाग गले में सुंदर गेहने
गौरा से इतना कहा - संदेश में

आये दूल्हा-----

आई खुशी में गौरा की मैया, की जब आरती उड़ी है तलैयाँ
फेंकी हैं थाली फिर तो आवेश में

आये दूल्हा-----

आज "श्री बाबा श्री" की सुने त्रिपुरारी
रूप दिखा दो विनती हमारी
होड़ो - होड़ो माया अपनी - आओ होश में...

आये दूल्हा-----